प्रेस विज्ञप्ति

गोविन्द बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय पंतनगर, जिला- ऊधमसिंह नगर (उत्तराखण्ड)

किसानों के लिए धान-गेंहू फसल चक्र के हानिकारक प्रभावों से बचने के उपाय

पंतनगर। ३१ मई, २०१८। पंतनगर विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने गहन विचार मंथन के बाद धान-गेंहू फसल चक्र अपनाने के कारण हो रहे हानिकारक प्रभावों जैसे, जल के अत्यधिक अपव्यय एवं बढ़ रही लागत को कम करने के उपाय ढूंढ निकाले हैं। धान-गेंहू उत्तर भारत के मैदानी क्षेत्रों का एक प्रमुख फसल चक्र है, जो विगत ४-५ दशको से प्रचलित है। धान में कदेड़ एवं खेत में लगातार पानी भरे जाने तथा गेंहू में अत्यधिक जुताई के कारण फसल लागत अधिक आती है साथ ही मृदा स्वास्थ्य एवं पैदावार में गिरावट आ रही है। विगत कुछ वर्षों से कम्बाईन द्वारा कटाई हो रही है, जिससे फसल अवशेष प्रबंधन में भी समस्या आ रही है और किसान सामान्यतः इसे जला रहे हैं। इन समस्याओं पर चर्चा कर निदान हेतु वैज्ञानिकों द्वारा विचार मंथन किया गया, जिससे किसानों के लिए विभिन्न उपाय अपनाए जाने के सुझाव निकलकर आये।

वैज्ञानिकों ने सुझाव दिया है कि किसानों द्वारा रोपाई-धान के स्थान पर धान की सीधी बुआई की जा सकती है, जिससे जल की काफी बचत होगी। किसानों द्वारा पारम्परिक धान-गेंहू में हरी खाद का समावेश कर इसे टिकाऊ बनाया जा सकता है साथ ही मृदा की गुणवत्ता को बढ़ाया जा सकता है। कम्बाईन द्वारा काटे गये धान में पुआल को बेलिंग मशीन द्वारा खेत से बाहर निकाल कर, हैप्पी सीड-ड्रिल द्वारा गेंहू की सीधी बुआई की जा सकती है। कम फसल अवशेष होने पर सीधे भी हैप्पी सीड-ड्रिल चलाया जा सकता है। वैज्ञानिकों ने सुझाया कि हैप्पी सीड-ड्रिल चलाते समय खेत में नमी काफी अच्छी होनी चाहिए। धान की सीधी बुआई और गेंहू की हैप्पी सीड-ड्रिल से बुआई को धान-गेंहू फसल चक्र के टिकाऊपन की दृष्टि से उत्तम तकनीक के रूप में देखा जा रहा है। वैज्ञानिकों ने यह भी सुझाव दिया कि किसान कम्बाईन के साथ ही बेलर भी लगाकर धान के अवशेष को अन्य उपयोग में ला सकते है, जिससे अवशेष को जलाने से हो रहे पर्यावरण के प्रदूषण से भी बचाव किया जा सकता है। उन्होंने फार्म मशीनरी विषय के वैज्ञानिकों को भी इस ओर ध्यान देने की आवश्यकता बतायी।